अन्तरंगभाव में श्रीश्रीमाँ

एकदिन शैय्या से उठने के पश्चात् नियतिदीदी ने श्रीश्रीमाँ को पुछा – "माँ, ये जो अधिकतर लोग भगवान को पति के रूप में पाने के लिए साधना करते हैं, तो भगवान को पतिरूप में पाने के लिए तप करने से ही क्या पाया जा सकता है?"

श्रीश्रीमाँ– एकदल महामूर्ख है, वे भगवान को स्वामी या पतिरूप में पाने के लिए साधना के नाम से ढोंग करता है और दिखावा भी करता है। क्या भगवान को और कोई काम नहीं है कि वे अपनी भगवती को परित्याग कर, अपने नित्य-गृहस्थी को तोड़कर फिर एक साधारण क्षुद्रातिक्षुद्र जीव को स्त्रीरूप में ग्रहण करेंगे? तो तुम ही कहो न क्यों? ऐसे किसी भगवान को देखी हो जिसका 'स्त्री' सत्ता नहीं है? नारायण की लक्ष्मी हैं, शिव की दुर्गा हैं और ब्रह्मा की सरस्वती हैं। तुम गोलोक में जाने से देखोगे कि भगवान कृष्ण की स्त्री राधा हैं। अतएव कोई भी उनके जैसी अच्छी पत्नी को त्याग कर अन्य किसी को ग्रहण नहीं करेंगे। और करेगा ही क्यों?

नियतिदीदी– तब मीराबाई, राधा, इनसब के अपना पति रहने पर भी कृष्ण को पतिभाव में आराधना करके कैसे प्राप्त किया था?

श्रीश्रीमाँ– मीराबाई और राधा, गोदाम्मा, क्या ये तुम्हारे जैसे जीवात्मा या स्त्रीयाँ थी, ऐसा तुम समझते हो?

नियतिदीदी– नहीं, मैं कह रही हूँ कि मीराबाई अथवा राधा के भी तो जागतिक एक स्वामी था, क्या था तो?

श्रीश्रीमाँ– इसलिए ही तो मैं कह रही हूँ कि स्त्रीजाति की कामना-वासना इतनी ही प्रबल होती है कि सब से पहले सोचना चाहिए कि मीराबाई या राधा, ये कौन थी? –ये तो वास्तविकता में वैकुण्ठ की लक्ष्मी एवं गोलोक की राधा थीं। ये तो जगत् को शिक्षा देने के लिए भगवान की साथी होकर आयीं थीं। क्या उन सब ने भगवान को पतिरूप में पाने के लिए साधना की थीं? भगवान ही इनके सान्निध्य के अभाव के कारण इनके सन्निकट अपना परिचय एवं इनके प्रकृत परिचय को ज्ञापित करते हैं। असल बात यह है कि सत्य ही मीरा एवं राधा भगवान की पत्नी थी अर्थात् भगवती थीं। अब देखो, साधारण अज्ञ नारी यदि अपनी अलीक कल्पना द्वारा भगवान को पतिरूप में पाना चाहती है तो इस कामना के द्वारा क्या वह उन्हें प्राप्त कर सकेगी? वह मानसिक भाव में विकारग्रस्थ होंगी और क्या? देख रहे हो ना मुनिऋषिगण भी अपना permanent (चिरस्थायी) स्त्री लेकर पृथ्वीतल पर आकर गृहस्थीधर्म का पालन करते हैं, नहीं तो वे सब पथभ्रष्ट हो जाऐंगे। शिव-सत्ता व शक्ति-सत्ता कहकर आध्यात्मिक शास्त्र में सृष्टि के नियमानुसार एक नित्य दिव्य का अनुशासन है। इसे सब को मानना पड़ता है।

नियतिदीदी– फिर, पति-पत्नी का नित्य सम्बन्ध कैसे निर्वाचन होता है?

श्रीश्रीमाँ– पुरूष ही हो या नारी ही हो, तपोबल से पहले माया के आवरण से मुक्त होना पड़ता है। तत्पश्चात् तप एवं साधना द्वारा शिवावस्था को लाभ करना पड़ता है। शिवावस्था प्राप्ति के पश्चात् शिव-सत्ता और शक्ति-सत्ता का रहस्य ज्ञात हुआ जा सकता है। तुमसब को जैसे प्रारम्भ में ही भगवान के प्राप्ति के प्रति लोभ हो जाता है क्यो! एकबार भी नहीं सोचा कि भगवान को चाहने से भगवती का क्या होगा? ऐसे स्वार्थपरता-सम्पन्न भाव के लिए ही भगवान तुम सब के ऊपर विरक्त होते है।

नियतिदीदी– तब हमें क्या करना चाहिए?

श्रीश्रीमाँ– भगवान-भगवती को अभेदभाव में एकसाथ आराधना करनी चाहिए। ऐसा करने से भगवान व भगवती दोनों ही प्रसन्न होते हैं । तभी सत्य का सन्धान मिलता है। जानते नहीं हो क्या भागवत में है कि गोपीगण ने पहले कात्यायनी देवी की आराधना की थी, भगवान श्रीकृष्ण को पाने के लिए।

नियतिदीदी– हाँ, हाँ, यही तो ठीक है!

–(१५ मार्च २००६ साल की घटना)

–मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख

इन्द्रिय-निग्रह से बिन्दु का स्थैर्य प्राप्त होता है। और आसन में दृढ़ रहने की शक्ति बढ़ती है।

–श्रीश्रीमाँ सर्वाणी